International Journal of Education, Modern Management, Applied Science & Social Science (IJEMMASSS)
ISSN : 2581-9925, Impact Factor: 6.882, Volume 06, No. 01(I), January - March, 2024, pp. 80-84

कला और कलाकार "डॉ. सुनील कुमार सक्सेना"

सारिका वर्मा*
प्रो. (डॉ.) सारिका सिंह**

सार

आज जनमानस इस संघर्षरत भीड़ में अपने उद्देश्यों से लेकर अबाध गति से भागा चला जा रहा है। विश्राम और मनोरंजन हेतु उसने पास समय का अभाव है। ऐसे में कलाकार व गुणी व्यक्तियों का कर्तव्य बनता है कि वह समाज को सार्थक गुणवत्ता प्रदान करें। ऐसे अगर एक चित्रकार की चित्रकृति उसे विराम देती है, तो वह उसे देखने मात्र से ठहर कर उसकी कला का आखों से रसपान कर विश्राम पा सकता हैं। इस संघर्षरत भीड़ में यदि उससे कला की बात की जाए तो वह उससे बहुत दूर प्रतीत होता है। हमारी ललित कलाएँ जो उसको सही आयाम की ओर सोचने के लिए प्रेरित करने से लेकर उसे इस मशीनी दौर में सुख प्रदान करने में सार्थक भूमिका निभा सकती है। अगर इस तरह देखा जाए यदि एक सुन्दर कलाकृति उसके सामने प्रस्तुत कर दी जाए तो कौतुहलवश वह उसे देखकर सुख प्राप्त करेगा। यानि की कला उसको मानसिक सुख प्रदान करने में अपना योगदान देगी।

शब्दकोश: *मनोरंजन, प्रतिष्ठित, समकालीन, शैलीगत, कलात्मक, कलाकृति।*

प्रस्तावना

मनुष्य जिस दिन अपने .पर आसमान और नीचे की जमीन से रिश्ते की पहचान करना सीख लेगा, उस दिन समस्त जगत में कोई भी ज्ञान, विज्ञान, प्रौद्योगिकी और कलाएँ सार्थक विकास के लिए सहायक भूमिका प्रदान करने लगेंगी। इसी कला की व्याख्या के लिए प्रतिष्ठित चित्रकार डॉ. सुनील कुमार सक्सेना की कला के बारे में एक लेख प्रस्तुत कर रही हूँ।

समकालीन कला के अन्तर्गत उनके चित्रों में जो सौन्दर्य, शक्ति, उन्माद रहस्यमयी रंगों के रूप व उनके शैलीगत प्रभावों से चित्रित कृतियाँ उन नवोदित कलाकारों, युवाओं व एक स्थापित चित्रकारों के लिए भी जो दृश्य रूप में चित्रण करते है, उनमें भी एक नई उर्जा का संचार प्रतीत होता है, क्योंकि किसी कलाकार की कलाकृति को देखने मात्र से अगर विषमय पूर्वक आह या वाह निकल जाए तो रंग और कला की सार्थकता स्वतः ही पूर्ण हो जाती है। इसका पूर्ण दर्शन डॉ. सक्सेना के चित्रों में देखने को मिलता है।

---

* शोध छात्रा, ललित कला संकाय, निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।
** शोध निर्देशिका, मानविकी, सामाजिक विज्ञान एवं ललित कला संकाय, निर्वाण विश्वविद्यालय, जयपुर, राजस्थान।

डॉ. सुनील कुमार सक्सेना की कला व व्यक्तित्व

डॉ. सक्सेना की कलाकृतियाँ अक्सर हवा, प्रकाश और स्थान के साथ समन्वय करने के लिए गहरे और चमकीले रंगों और पारदर्शी रंगों की संरचना से भरी होती हैं। आपका प्रायोगिक कौशल शानदार है, हर अगला काम एक अधिक आविष्कारशील विचार और नये उपकरण के साथ सामने आता है। आपके चित्रों का रहस्यवादी और आध्यात्मिक वातावरण, दुनिया से परे दूसरी दुनिया की भावना पैदा करता है।

आपकी सकारात्मक व सृजनात्मक सोच एक अलौकिक आकर्षण को जन्म देती है जो मानव जाति को मंत्रमुग्ध कर देती है। अमूर्त रूपों की आपकी खोज एक्रेलिक के उपयोग के माध्यम से आती है और पारदर्शी माध्यम की गुणवत्ता रचनात्मकता के एक नए क्षेत्र को स्थानांतरित करती है।

डॉ. सुनील सक्सेना

आपकी नियंत्रित गति रचनाओं पर आपके अपने जुनून को थोपती नहीं है अपितु मूल दृष्टिकोण की पवित्रता को बनाए रखता है, चाहे वह ऐतिहासिक अतीत की स्मृति हो, शास्त्रीय वास्तुकला हो, कुछ रहस्यमय रूपों पर एक प्रकार की शांति के साथ। यह शांत रचना आपकी गौधूलि और सर्वत्र फेंकी गई मन्द रोशनी का सार है।

"कला का सृजन कलाकार के अन्तःकरण के भाव और विचारों से होता है। उसकी भावनाओं एवं चिंतन को दिशा देने में सामाजिक और सांस्कृतिक वातावरण का पर्याप्त योगदान रहता है। साथ ही साथ उसकी आभिव्यंजना और विषयों के चुनाव में कलाकार के व्यक्तित्व का सन्निवेश बराबर दिखाई देता है। भारतीय कला भारतीय जीवन और वातावरण से प्रेरणा लेकर विकसित हुई है।"1

उपरोक्त चित्र जो प्रस्तुत किए गए हैं, उनमें रंगों का प्रभावपूर्ण इस्तेमाल, एक्रेलिक जल रंग की तरलता, सौम्यता देखते ही बनती है। ऐसा लगता है, जैसे रंग, कलाकार के अनुसार चलने को बाध्य है और रंगों में समाविष्ट सम्पूर्ण सृष्टि प्रकृति के पूर्णत्व को प्राप्त प्रतीत होती है। जो दर्शक को, प्रकृति प्रेमियों को सृष्टि के परमसुख व विलक्षण सौंदर्य की ओर अग्रसर करती है। चित्रों में भाव व कला पक्ष दोनों का समावेश कोमलता के साथ एक दार्शनिक प्रभाव छोड़ता प्रतीत होता है।

जिसमें डॉ. सुनील कुमार सक्सेना की वर्षों की कला साधना का प्रभाव देखते ही बनता है। प्रतिष्ठित कलाकार की पहचान हम उसके कलात्मक ज्ञान, मौलिक सृजनता, मानवीय संवेदनाओं के आधार पर की जाती है।

चित्र की एक 'स्वागत' सत्ता हो सकती है, जो प्रकृति के दृश्यगत सत्य से भिन्न हो सकती है। चित्र के 'रूप' का प्रकृति के आकारों पर आधारित होना अनिवार्य नहीं है।2

डॉ. सक्सेना जितने अच्छे चित्रकार हैं, उतने ही अच्छे वो पुत्र, भाई, पति, पिता, मित्र व शिष्य भी है और इससे बढ़कर एक अच्छे नागरिक व समाजसेवी भी हैं। अगर हम बात करें उनके शुरुआती दौर की तो कलाकार ने हर विधा में काम करते हुए अपनी बहुमुखी प्रतिभा को प्रस्तुत किया है फिर चाहे वह व्यक्तिचित्र हो या फिर दृश्यचित्र, साथ ही साथ कुछ रचनाएँ भी उनकी खूबी रही है, कभी– कभी एकान्तचित्त जब वो हुए तब उनकी कूँची कलम बनकर कैनवास की जगह पन्नों में जागृत हो उठी। विभिन्न पत्रिकाओं में उनके लेख, शोधपत्र, चाहे राष्ट्रीय हो, चाहे अन्तरर्राष्ट्रीय हो, सभी जगह देखने को मिलते हैं। साथ ही वह एक अच्छे कला आलोचक भी हैं।उन्होंने विभिन्न "कला और कलाकारों पर भी उनकी कृतियों के साथ उनकी व्याख्या भी की हैं।

डॉ. सक्सेना की कला की प्रभावपूर्ण विशेषताएं

डॉ. सुनील सक्सेना ऐसे ही बेहतरीन कलाकारों में से एक है, जिनके स्पर्श मात्र से ही रेखाएँ नृत्यरत हो उठती है और भावनाएँ विविध रंगों में समाहित हो स्वयं रूप लेने लगती है। डॉ. सक्सेना एक तरफ जहाँ चित्रकला मर्मज्ञ है वही विद्यार्थियों के आदर्श गुरु व मित्र है, जिन्होंने अपने शैक्षणिक अवधि में बड़ी सादगी से एक आदर्शवादी, अनुशासन एवं सुव्यवस्थिन ढंग से चित्रकला की यात्रा में बिना भेद–भाव के छात्र–छात्राओं को चित्रकला का मर्म सिखाते हुए रंगों से खेलना सिखाया है।

गुरु और शिष्य की परंपरा को पूर्णत्व प्रदान करते हुए, अमूर्त को मूर्त रूप देते हुए डॉ. सक्सेना का मृदुल आचरण सम्मोहन स्थापित करते हुए, अधरों पर मधुर मुस्कान संजोते हुए, अपनी रेखाओं में निरंतर कलात्मक गति प्रदान करते रहे है। चित्रकला के प्रति समर्पण का भाव जो चित्रकार के लिए प्रथम सीढ़ी है, जो डॉ. सुनील सक्सेना के व्यक्तित्व व कृतित्व का प्रमुख आधार रहा है।

चित्रकला के विविध आयामों को हम आपकी कलाकृतियों में एकटक निहारते हैं और उसके रंगों में मानो खो से जाते हैं। रंगों और रेखाओं का उभार, गहराव, छायांकन और प्रकाश ऐसे प्रतीत होते हैं जैसे प्रकृति स्वयं चित्र में उतर आयी हो। रंगों ने जैसे कि रेखाओं में स्फूर्त चेतना भर दी हो और देखते–देखते चित्रांकन सजीव रूप ले लेता है। रंगों की खुशबू, उनका स्वभाव, उनके भावार्थपूर्ण शैली, रेखांकन और रंगों का नाद–नृत्य यदि सीखना और देखना है तो यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि आप डॉ. सुनील सक्सेना को काम में रत देखिए, उन्हें रंगों से खेलते देखिए। उनकी शैली में कब कौन सा रंग किधर से गहराते हुए, लहराते हुए अपनी हल्की व गहरी आभा में खूबसूरत आकार ले कर कब अद्‌भुत कलाकृति का रूप ले ले, यह देखते ही बनता है।

महत्वपूर्ण पक्ष

- कलाकार की कृतियों के साथ–साथ व्यक्तित्व की पृष्ठभूमि को उजागर करना जिससे नये कलाकारों को अनुभव व प्रेरणा प्राप्त हो।
- प्राकृतिक चित्रण कलाकार का प्राथमिक उद्देश्य है जिसमें मुख्य रूप से नदियाँ पहाड़, चट्टाने, पेड़–पौधे, झरने, घाटियाँ आदि शामिल है।
- कलाकार ने अपने कृतित्व में प्राकृतिक चित्रण की महत्ता को रंग प्रकाश, बनावट, छाया, चमक व विभिन्न सौन्दर्य तत्वों के माध्यम से अध्ययन में सम्मिलित किया है ।
- कलाकार का कला के प्रति समर्पण उसके विस्तार और निरंतर रचित रचनाओं से युवा पीढ़ी व कलाकारों व समकालीन कला के प्रति योगदान के महत्व को दर्शाना है ।
- कलाकार का व्यक्तित्व व कृतित्व दोनों ही समाज, युवापीढ़ी, व समकालीन कलाकारों के लिए एक प्रेरणास्त्रोत के रूप में प्रस्तुत है ।

निष्कर्ष

सरल शब्दों में हम ये कह सकते है कि चित्रकला का कोई भी कोना डॉ. सक्सेना से अछूता नहीं रहा है फिर चाहे वो चित्रकला, मूर्तिकला, वास्तुकला, प्रकृतिचित्रण व मानव चित्रण क्यों न हो, आप चित्रण की

बारीकियों से भली भाँति परिचित है। सौम्य व्यक्तित्व व मधुर आचरण रखने वाले मृदुभाषी कलाकार आज भी किसी तपस्वी की भाँति अपनी कला रचना, कला साधना में अनवरत लगे रहते हैं और अपनी कृतियों से युवाओं व समाज को प्रेरित कर रहे हैं।

डॉ. सुनील सक्सेना की कृतियों में पहाड़ों के अंतरंगी रूपों से लेकर, मन को ताजगी दिलाने वाले व प्रकृति की विभीषिका के प्रभाव वाले परिदृश्य तक, प्रत्येक कलाकृति में कलाकार अपने काम में अपनी अनूठी शैली का रूपांकन कर अपने दृश्य चित्रण के व्यापक विस्तारों और मनोरम दृश्यों पर जोर दिया है, जो परिदृश्य चित्रकला और इसके विस्तार को प्रदर्शित करता हैं। कला रचना हमारी इंद्रियों को जागृत करके उसे शांति व सुकून प्रदान कर उत्साह व विस्मय तक कई तरह की भावनाएं पैदा करती है।

प्रो. सक्सेना की कला यात्रा समाज के साथ युवा पीढ़ियों व समकालीन चित्रकारों के लिए प्रेरणास्रोत है। इनके काम करने के तरीकों से लेकर एक मूर्त रूपी कृति का निर्माण इनकी साधना में लीन विभिन्न वर्षों को उजागर करता है। एक कलाकार कुछ ही समय में कलाकार नहीं बनता अपितु कला में निरन्तर उनकी तल्लीनता, कला में उनकी अनवरत साधना का संगम होता है जो अन्त में आकर उस चित्रकार के जीवन वृत्त को प्रेसित कर उसे एक स्थापित व प्रत्रिठित चित्रकार बनाता हैं।

डॉ. सक्सेना की कलाकृतियों की प्रदशर्नी राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हो चुकी है और आज भी अनवरत स्वस्थचित्त होकर अपनी कला साधना में रमें हुए हैं।

विभिन्न राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय तथा संस्कार भारती से कलासाधक के रूप में सम्मानित किया जा चुका है। परन्तु इन सबसे ज्यादा वह कला की साधना में रत रहते हुए उनके कथनानुसार "मैं अपना योगदान राष्ट्र व समाज को दे रहा हूँ", उक्ति ने मुझे प्रेरणा प्रदान की।

डॉ. सुनील कुमार सक्सेना राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय कला की कार्यशालाओं में उनकी कृतियों को अच्छी ख्याति मिली है और साथ ही वहाँ के युवा कलाकारों को भी प्रोत्साहन व उनकी तकनीक की नयी विधा को सीखने का मौका मिला है।

डॉ. सक्सेना की जितनी कृतियाँ लोकप्रिय है उतना ही वह स्वयं खुद है। व्यक्तित्व के धनी डॉ. सक्सेना अपने शिक्षण कार्य में कई विद्यार्थियों के चहेते भी रहें जो आज अच्छे पदों पर आसीन है, जिनमें प्रोफेसर, कुछ अच्छे कलाकार व कुछ अच्छे कला साहित्यकार भी हैं और वो आज भी अपने चहेते गुरु की विधा और नाम दोनों को आगे बढ़ाते हुए अपना कार्य निष्ठापूर्वक कर रहे हैं और समय–समय पर अपने गुरु का मार्गदर्शन भी लेते हैं।

संक्षिप्त में कहें तो डॉ. सुनील सक्सेना का व्यक्तित्व व कृतित्व दोनों ही समाज, युवापीढ़ी, व समकालीन कलाकारों के लिए एक प्रेरणास्त्रोत हैं, और वर्तमान में भी इनका पूरा जीवन कला व कला साधना में समर्पित है। डॉ. सक्सेना सप्तम दशक में पहुंचने पर भी अनवरत कृतियों को मूर्त रूप देने में लगे हैं, और विभिन्न प्रदर्शनियों में अपनी कलाकृतियों को प्रदर्शित कर रहें हैं तथा कला के हर क्षेत्र में अपना योगदान दे रहे हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ. एस. एन. सक्सेनाः प्रागैतिहासिक कला, पुस्तक दृश्यकला एवं दृष्टिकोण, संपादक– समीर सक्सेना, सौरभ सक्सेना, शालिनी सक्सेना, प्रकाशन– मनोरमा प्रकाशन,पृष्ठ सं.–21.
2. प्रो. चिन्मय मेहताः आधुनिक कला आन्दोलन, कलादीर्घा अक्टूबर, 2000, सम्पादक : ललित कला अकादमी, पृ.सं. 81

❖◆❖